IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, September 2022
Impact Factor: 6.252

''बघेलों का गहोरा अंचल में आगमन''

सुखेन्द्र सिंह
शोधार्थी इतिहास, शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोध सारांश :–

गहोरा के बघेल मूलतः गुजरात के चालुक्य सोलंकी हैं। गुजरात के पाटन (अनहिलवाड़ पाटन) से प्रायः 10 मील दक्षिण–पश्चिम में 'व्याघ्रपल्ली' गाँव स्थित है।[1] गुजरात के चौलुक्य कुमारपाल (1143–73 ई.) ने अपनी मौसी के पुत्र अर्णोराज को इसी व्याघ्रपल्ली का सामन्त नियुक्त किया था। इसी अर्णोराज के पुत्र लवणप्रसाद को 'व्याघ्रपल्लीय' कहा गया है।[2] इस लवणप्रसाद व्याघ्रपल्लीय का पुत्र वीरधवल हुआ। इस वीरधवल का पुत्र वीसलदेव गुजरात का पहला बघेल शासक हुआ, जिसने 1245 से 1262 ई. तक शासन किया।[3] उल्लेखनीय है कि बघेल शासक वीसलदेव के खम्भात में शिलालेख [4] में बघेलों का वंशारम्भ प्रायः उसी रूप में दिया गया है, जिस रूप चालुक्य नरेशों का मिलता है। इस शोध पत्र में बघेलों के आने का मूलतः वर्णन शामिल किया गया है।

मुख्य शब्द :– गहोरा, बघेलों, प्रशासनिक, सैनिक, व्यवस्था, अभिलेख आदि।

संदर्भ स्रोत :

[1]. अशोक कुमार मजूमदार, चौलुक्याज आफ गुजरात, भारतीय विद्या स्टडीज 1956, पृ. 169
[2]. जिन विजयमुनि सम्पादित ''प्रबन्धचिन्तामणी'' (मेरूतुंग कृत), कुमारपालप्रबन्ध, श्अथ कदाचि दानाक नामा मातृष्वस्ती यस्तत्से वागुणतुष्टेन राज्ञा दत्त सामन्त पदोपि....।' पृ. 94, तथा श्श्रीमदीम देव राज्य चिन्ताकारी व्याघ्रपल्लीय संकेत प्रसिदःश्री मदानाकनन्दनः श्री लवणप्रसाद।' पृ० 181
[3]. चौलुक्यों की मूल शाखा की समाप्ति के बाद यह बघेल शाखा 1245 से 1304 ई0 तक गुजरात में स्वतंत्र रूप से शासन करती रही, मजूमदार, वही अ0 10
[4]. भावनगर इन्सक्रिप्सनस, क्र. 216, मजूमदार वही, पृ0 169
[5]. मुस्लिम इतिहासकार, इसामी, बर्नी–तवारीख–ए–फिरोजशाही, अनु० रिजवी
[6]. नैणसीख्यात, भाग–1, पृ0 213
[7]. रासमाला (फोर्वस0189 पृ. 278
[8]. एकत्रा बान्धवगढ़ (जमाबन्दी–1)
[9]. रवासकलमी वंशावली (सरस्वती भंडार, रीवा किला)
[10]. रीवा राज्य गजेटियर 1907 ई0, जीतन सिंह, रीवा राज्य दर्पण, रघुवर प्रसाद, रीवा राज्य का इतिहास, भानू सिंह, वीर व्यंकटरमण, व्याघ्र वंशावली (उर्दू) यादवेन्द्र सिंह, रींवा राज्य का इतिहास, रामप्यारे अग्निहोत्री, रींवा राज्य का इतिहास, बांधव पत्रिका, वि०स० 2002
[11]. माधव, वीरभानूदय काव्य, जो संभवतः 156 ई0 के आसपास के और बघेलों का गोत्र भारद्वाज था तथा उनके वर्तमान वंशधरों लिखा गया था।
[12]. भारद्वाज गोत्र गुजरात चालुक्य का भी यही गोत्र है। रीवा के बघेल नरेश भी भारद्वाज गोत्र के हैं, रणजीत सिंह सत्याश्रय 1938 पृ० 48 दृ 49, 77, 96, माधव, वीरभानूदय काव्य, 1938, सर्ग व श्लोक 19 भारद्वाजारिष्टनेमि वंशजों संग्डतो नृपौ, श्लोक 28–''भारद्वाजो मुनीन्द्र .....व्याघ्रपाद.....
[13]. माधव, वीरभानूदय काव्य, सर्ग 1, श्लोक 6–8

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, September 2022
Impact Factor: 6.252

[14]. का० प्र० जायसवाल युगीन भारत, पृ0 105 चित्र।
[15]. 'गुजरात ते आए पुरिखा बान्धवगढ़ (जमाबन्दी–1) सरस्वती भण्डार, किला रीवा।
[16]. एकत्रा बान्धवगढ़–'भरन्वये वीसलदेव एधित कालिंजरिह आई दुई भाई भर राजा के चाकर भें...' एकत्रा कालिंजरे।' –
[17]. हबीबुल्ला – The Foundation of Maslim rule in India 1945 पृ0 142
[18]. वसु हिन्दी विश्वकोष, कलकत्ता भाग 15, पृ0 727, 728, भुंइहाखोह मिर्जापुर में स्थित है।
[19]. इम्पीरियल गजेटियर भाग 6, पृ0 149 व 349
[20]. – रामप्यारे अग्निहोत्री – वही, री०रा०इ०... पृ0 344–45
[21]. भूषण ''वसन्त राय सुर्की की काहूंन बाग मुरकी ।''
[22]. लोधी संभवतः सुर्कियों से समान भरों के आधिपत्य के शासन करते थे।
[23]. एकत्रा बाधोगढ़, जमाबन्दी–3, 'तिवारी मिलाई कै आधा राजदेई का हीसा' सरस्वती भण्डार, रीवा एकत्रा बाधोगढ़, 'लोधिन का मारिन, गहोरा अमलभा'
[24]. माधव, वीरभानूदय काव्य 'लब्धवा गहोरा' 1/10
[25]. मिन्हाजुद्दीन सिराज, तबकात–ए–नासिरी–'भाट गहोरा', जिसका केन्द्र कालंजर था।
[26]. मिनहाज सिराज, तबकात–ए–नासिरी, पृ0 824
[27]. इण्डि. एन्टी जिल्द 4, पृ0 265, वि०रि०सो० जिल्द 14, पृ0 297, जिल्द, 46, पृ0 227
[28]. जीतन सिंह, रीवा राज्य दर्पण, पृ0 38, राधेशरण, संक्रमण कालीन विन्ध्य में सत्ता संघर्ष (शोधलेख)
[29]. रामलखन सिंह, प्रतिहार, राजपूतों का इतिहास पृ० 95 कमर (कवर) भी संभवतः क्षुद्र जातिय थे
[30]. हीरा नन्द शास्त्री, क्रिटिकल एनालसिस ऑफ वीरभानूदय काव्य बड़ौदा 1938, पृ0 23–24